* काम-कला का ध्यान *

'काम-कला' के दो स्वरूप हैं। इसके दो स्वरूपों में से एक स्वरूप दो अक्षरों के 'अहं' पद से व्यक्त होता है। अतएव लिखा है- 'अहमाकाराख्या-सिद्ध-काम-कलाम्-इति' अर्थात् **'अहं'** पद से व्यक्त ('अहं'-स्वरूपवाली-जिसका स्वरूप 'अहं' है) **'काम-कला'** का ध्यान करे। 'अहं' यह एक अपूर्व भाव है, इसमें द्वितीय नहीं है। अकार **'अ'** वर्ण-माला का प्रथम अक्षर है और प्रकाश-रूप पर-शिव अथवा काम वाचक है। **'काम्यते अभिलष्यते स्वात्मत्वेन परमार्थविद्भिरिति कामः'** अर्थात् परमार्थ को जानने वाले योगी लोग जिसकी सर्वदा कामना करते हैं, वह काम है अर्थात् पर-ब्रह्म। पर-शिव और पर-ब्रह्म एक ही वस्तु है। **'ह'** वर्ण-माला का अन्तिम वर्ण है और यह विमर्श-रूप चित्-शक्ति अथवा कला का सूचक है। अतः **'अ'** और **'ह'** इन दो अक्षरों का सामरस्य (मेल) अर्थात् इन दो अक्षरों से बना हुआ 'अहं' पद 'काम-कला' है। प्रकाश **'अ'** विमर्श **'ह'** आत्मक (प्रकाश-विमर्शात्मक) अहन्ता का ध्यान **'काम-कला'** का सूक्ष्म ध्यान है। **'मैं पूर्ण हूँ'**- यह विचार करना ही 'काम-कला' का ध्यान करना है। अहं सः = हंसः, सः अहं = सोऽहम्। **'हंसः' 'सोऽहम्'** का विचार ही अद्वैतावस्था है, जो पूर्णता का द्योतक है। यही **'काम-कला'** का सूक्ष्म ध्यान है।

कला-क = आकाश, ला = पृथ्वी, अर्थात् पृथ्वी से आकाशपर्यन्त दिखायी देने वाला सब कुछ ब्रह्म ही है। अतएव वेद ने कहा है- **'सर्वं खल्विदं ब्रह्म।'** शिव से लेकर पृथ्वी-पर्यन्त जो कुछ दिखायी देता है, सब मैं (ब्रह्म) ही हूँ, इस प्रकार दिचार करना ही **'काम-कला'**- विमर्श या **'काम-कला'** का ध्यान कहलाता है।

शास्त्र **'काम-कला'** (अहं) का निरूपण **'ई'** से भी करते हैं। वेदों ने इस ईकाराक्षर को प्रणव (ॐकार) का समानार्थक दर्शाया है। जिस प्रकार ॐकार अवयवों (अक्षर या मात्राओं) के संयोग से बनता है, उसी प्रकार काम-कलाक्षर ईकार भी रक्त-बिन्दु, शुक्ल-बिन्दु, मिश्र-बिन्दु और संवित् (अथवा हार्ध-कला) इन चार अवयवों से बनता है-

काम-कलाक्षर ईकार के चार अवयवों को देवी के अङ्गों में परिणत जानना अर्थात् देवी के अङ्गों में और **'काम-कला'** के चार अवयवों में अभेद मानना यानी **'काम-कला'** और देवी को एक ही समझना **'काम-कला'** का ध्यान करना है।

शरीर में शिर से लेकर घटिका-पर्यन्त, कण्ठ से स्तन-पर्यन्त और हृदय से लेकर सीवनी-पर्यन्त तीन भाग हैं। यही तीन भाग शरीर के मुख्य भाग होते हैं। केश और हाथ-पैर शरीर की शाखाएँ मानी जाती हैं। शरीर के भागों के समान ही काम-कलाक्षर ईकार भी तीन भागों से अर्थात् रक्त, शुक्ल और मिश्र-बिन्दुओं तथा संवित् से बना हुआ है। देवी के शरीर के तीन भागों में काम-कलाक्षर के मिश्र रक्त और शुक्ल बिन्दु तथा संवित् का ध्यान करना और देवी के शरीर तथा काम-कलाक्षर ईकार का अभेद-चिन्तन करना ही 'काम-कला'-ध्यान कहलाता है।

देवी के मुख में मिश्र-बिन्दु का, कण्ठ से स्तन-पर्यन्त भाग में अर्थात् स्तनों में रक्त और शुक्ल-बिन्दुओं का तथा हृदय से लेकर सीवनी-पर्यन्त अर्थात् देवी के शरीर के तृतीय भाग में हार्ध-कला अर्थात् संवित् का ध्यान करना चाहिये। अर्थात् ईकाराक्षर में मिश्र, रक्त और शुक्ल बिन्दु की भावना करें और रक्त बिन्दुओं में क्रमशः मुख, स्तन-मण्डल और संवित् का ध्यान करे। पद्धतियों में लिखा है-

'अथ बिन्दुना मुखं, बिन्दु-द्वयेन स्तनौ सपरार्धेन योनिरिति कामकलात्मिकां ध्यात्वा, सौः इति देवी-शक्ति-बीजं श्रीदेव्या हृदयत्वेन भावयेत्।'

'सौः' देवी का शक्ति-बीज है। इसमें यह भावना करे कि यह देवी का हृदय है। यह बीज सकार **'स'**, औकार (औ) और विसर्गों का समूह है अर्थात् इनके योग से (सौः) बना है। **'स'** का अर्थ **'वह'** है (स = वह)। विसर्ग का अर्थ **'ह'** (हकार) है। हकार **'अहं'**- 'मैं' का पर्याय है। औकार (औ) दोनों का सामरस्य प्रकट करता है। अतः **'सौः'** का तात्पर्य है- **'मैं वह हूँ अर्थात्' 'ब्रह्मैवाऽहं'**- मैं ब्रह्म ही हूँ।

षडाम्नायों के अनुसार उक्त बिन्दुओं और **'हंसः'** के संयोजन के फलस्वरूप विविध प्रकार की अनुभूतियाँ साधना के स्तर के अनुरूप साधकों को मिलती है।

संवत् २०६१ वि.
अमरकण्टक, जिला-शहडोल (म.प्र.)

-योगिराज ब्रह्मर्षि बर्फानी